

“छिंदवाड़ा जिले के परिपेक्ष्य में समुदाय और सांस्कृतिक मनोविज्ञान की सहायता से आदिवासी समुदायों के युवाओं में जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन का तुलनात्मक अध्ययन ”

प्रस्तुतकर्ता- श्रीमति रत्नेश दुबे रिसर्च स्कॉलर (मनोविज्ञान), रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय रायसेन
डॉ कंचन मथानकर सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान), रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय रायसेन

संक्षिप्त रूप (सार) :-

प्रस्तुत शोध आदिवासी समाज के युवाओं पर उनके जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन के प्रभाव पर किया गया है। जिसकी सहायता से आदिवासी युवाओं के जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिबलन पर प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के अधिकांश क्षेत्र में जनजाति समुदाय निवास करते हैं। छिंदवाड़ा जिला आदिवासी बाहुल्य जिला माना जाता है, जिसमें संधाल, भरिया, गोंड, पारदी, भील, सहरिया, प्रधान आदि होती हैं। बहुसंख्यक आदिवासी समुदायों में गोंड, भरिया, प्रधान शामिल हैं। जिस पर यह शोध कार्य किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से आदिवासी समुदाय के युवाओं का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया है। जिसमें 80 प्रतिदर्श का चयन किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट होता है कि, आदिवासी युवाओं में जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। जो स्पष्ट करता है कि जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिबलन का प्रभाव पड़ता है।

शब्द कुंजी :- आदिवासी समुदाय के युवा, जीवन की गुणवत्ता, प्रतिबलन ।

प्रस्तावना :- प्रस्तुत शोध आदिवासी समाज के युवाओं पर उनके जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन के प्रभाव पर किया गया है। जिसकी सहायता से आदिवासी जीवन पर प्रतिबलन एवं जीवन की गुणवत्ता का मापन करना है। जनजातियों की जीवन शैली, परंपरा एवं संस्कृति पर विचार की एक दिशा यहां से भी विचारणीय मानी जा सकती है। आदिवासी समुदाय के युवाओं के मध्य यह अध्ययन किया गया है। किसी भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा उनके युवा माने जाते हैं। वास्तव में आदिवासी समाज प्रकृतिवाद मानववाद के सर्वाधिक करीब है। मध्यप्रदेश के अधिकांश क्षेत्र में जनजाति समुदाय निवास करता है। ये मुख्य तौर पर झाबुआ, धार, मण्डला, बालाघाट, उमरिया, होशंगाबाद, हरदा, छिंदवाड़ा जिलों में निवास करते हैं। आदिवासी बाहुल्य जिला छिंदवाड़ा में आदिवासी युवाओं पर उसकी जीवन की गुणवत्ता एवं तनाव पर अध्ययन किया गया है।

आदिवासी शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है। जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से इतिहास में सबसे पुराना संबंध रहा है। परंतु विश्व के विभिन्न भू-भागों में जहां अलग-अलग क्षेत्रों से आकर लोग बसे हो, उस विशिष्ट भाग के प्राचीनतम अथवा प्राचीन निवासियों के लिए भी इस शब्द का उपयोग किया जाता है, इन्हें मूल निवासी और आदिवासी भी कहा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में जीवन की गुणवत्ता पर अध्ययन किया गया है। जीवन की गुणवत्ता जो जीवन के नकारात्मक और सकारात्मक विशेषताओं को दर्शाती है। इसमें जीवन की संतुष्टि को दर्शाया जाता है और विभिन्न शोधों के आधार पर स्पष्ट होता है कि, जीवन की गुणवत्ता किसी भी समय किसी के जीवन में उत्कृष्टता को संदर्भित करती है। जो व्यक्तियों की संतुष्टि और खुशी में योगदान करती है। मासुलों का जीवन की गुणवत्ता का दृष्टिकोण के अनुसार जीवन की गुणवत्त पदानुक्रम की संतुष्टि के स्तर पर निर्भर करती है। शारीरिक सुरक्षा, आत्म सम्मान, आवश्यकताएं जिसके परिणाम स्वरूप गहन प्रसन्नता होती है।

जीवन की गुणवत्ता सेलिगमैन का दृष्टिकोण के आधार पर यह संतुष्टि की एक सामान्य भावना को संदर्भित करता है। जो व्यक्ति के मूल्यांकन पर आधारित है। शैलाम ने जीवन की – के विभिन्न आयाम

प्रस्तुत किए हैं। जिसमें जीवन की भावनात्मक गुणवत्ता, लोगों के बीच संबंध जीवन की भौतिक गुणवत्ता, व्यक्तिगत उन्नयन, जीवन की जैविक गुणवत्ता, स्व निर्धारक आदि प्रमुख हैं। प्रस्तुत अध्ययन का दूसरा क्षेत्र प्रतिबलन है। जो व्यक्ति के आंतरिक जीवन के लक्षण एवं वातावरण में समायोजन को दर्शाता है। यह व्यक्ति की भावनाओं के नकारात्मक रूप को दर्शाता है। जो मानसिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन को दर्शाता है। जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में अवसाद, चिंता असमायोजन, तनाव जैसे संवेगात्मक अस्थिरता परिलक्षित होती है। यह अनेक असमानताओं का प्रारंभ होना दर्शाता है।

सरसन एवं सारासन कहते हैं कि, प्रतिबलन एक ऐसी भावना या प्रतिक्रिया है, जो व्यक्तियों को तब होती है, जब उन्हें ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, जो उनसे प्रतिक्रिया की मांग करता है। जो विशेषकर व्यक्तियों की क्षमताओं के अनुकूल नहीं होती है।

उपरोक्त वर्णन के आधार पर स्पष्ट होता है कि प्रतिबलन जीवन की गुणवत्ता और शारीरिक मनोवैज्ञानिक सफलता के प्रतिकूल है। प्रतिबलन तनाव का नकारात्मक प्रभाव है जो व्यक्ति जीवन की गुणवत्ता पर अपना प्रभाव डालता है। जीवन की गुणवत्ता एक व्यापक बहुआयामी अवधारणा है, जो वांछित स्वास्थ्य परिणाम के रूप में महत्वपूर्ण है। जिसमें प्रतिबल मुख्य कारक है।

प्रस्तुत शोध में छिंदवाड़ा जिले के परिपेक्ष्य में आदिवासी समुदाय के युवाओं पर अध्ययन किया गया है। जिससे शोध परिणामों से निष्कर्ष प्राप्त कर युवाओं में प्रतिबलन एवं जीवन की गुणवत्ता के स्तर को ज्ञात किया जा सकता है।

उद्देश्य :-

- 1) छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी समुदाय पर सह सांस्कृतिक मनोविज्ञान की सहायता से आदिवासी युवाओं में जीवन की गुणवत्ता पर अध्ययन करना।
- 2) छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी युवाओं में प्रतिबलन का मापन करना।
- 3) छिंदवाड़ा जिले के परिपेक्ष्य में आदिवासी युवाओं में जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :- प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया ।

“छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी समुदाय के युवाओं में जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।”

स्वतंत्र चर :- छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी समुदाय के युवा ।

परंतंत्र चर :- जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन।

नियंत्रित चर :- आयु 20 से 30 वर्ष ।

शोध विधि :-

- 1) सर्वप्रथम छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी समुदाय के युवाओं का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन द्वारा किया गया।
- 2) आदिवासी समुदाय के शोधकार्य के संबंध में जानकारी दी गयी व उन्हें शोध कार्य हेतु तैयार किया गया।
- 3) आंकड़ों के संग्रह हेतु डॉ वंदना कौशिक एवं पूर्वा जग्गी द्वारा निर्मित जीवन की गुणवत्ता प्रश्नावली का चयन किया गया।
- 4) आंकड़ों के संग्रह हेतु डॉ0 एम सिंह द्वारा निर्मित तनाव मापनी का प्रयोग प्रतिबलन मापन हेतु किया गया है।
- 5) प्रतिदर्श का चयन करने के पश्चात प्रश्नावली की सहायता से आंकड़ों का संकलन किया गया।
- 6) प्रयोज्यों से प्राप्त प्रत्युत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों की गणना की गई एवं सारणीबद्ध किया गया।

7) आंकड़ों का विभिन्न सांख्यिकीय विधियों मध्यमान एवं प्रसरण विश्लेषण की सहायता से विश्लेषण कर परिणामों एवं निष्कर्षों की व्याख्या की गयी।

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोध में छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी युवाओं का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा निम्नानुसार किया गया।

आदिवासी युवा	प्रतिदर्श संख्या	आयु	स्थान
	80	20 से 30 वर्ष	जिला छिंदवाड़ा

उपकरण :- आदिवासी युवाओं का चयन शोध कार्य हेतु जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन का अध्ययन हेतु यादृच्छिक रूप से चयनित प्रतिदर्श पर डॉ. वंदना कौशिक एवं पूर्वा जगगी द्वारा निर्मित जीवन की गुणवत्ता एवं डॉ. एम सिंह द्वारा निर्मित तनाव प्रश्नावली का प्रशासन किया गया।

सांख्यिकीय गणना :- प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नांकित सांख्यिकीय विधियों प्रसरण विश्लेषण के अंतर्गत मध्यमान (M) दो समूहों के मध्य अंतर की जांच करने हेतु प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया।

परिणामों का विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्ष :-

समूह	मध्यमान	प्रसरण विश्लेषण	स्वतंत्रता की कोटि	सार्थकता के स्तर पर प्राप्त मान
जीवन की गुणवत्ता	61.97	0.55	79	0.01 - 7.01
प्रतिबलन	31.62			0.05 - 3.29

उपरोक्त तालिका के आधार पर स्पष्ट होता है कि आदिवासी युवाओं में जीवन की गुणवत्ता का मापन करने पर प्राप्त परिणामों का मध्यमान 61.97 है एवं प्रतिबलन प्रश्नावली से प्राप्त परिणामों की गणना करने पर प्राप्त मध्यमान 31.62 है। मध्यमान के स्तर के आधार पर स्पष्ट होता है कि आदिवासी युवाओं में प्रतिबलन का स्तर अधिक है। जो उनके जीवन की गुणवत्ता पर अपना प्रभाव डालता है। प्रसरण विश्लेषण की सहायता से प्राप्त मान 0.55 है जो स्वतंत्रता की कोटि 79 पर सार्थकता के स्तर 0.01 से प्राप्त मान 7.01 एवं 0.05 से प्राप्त मान 3.29 से कम है। जो स्पष्ट करता है कि जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

निष्कर्ष :- सांख्यिकीय गणना के आधार पर जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन में प्राप्त मान के आधार सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। दोनों प्रश्नावली के आंकड़ों में मध्यमान की गणना के आधार पर स्पष्ट होता है कि जीवन की गुणवत्ता एवं प्रतिबलन के मध्य अंतर पाया जाता है। आदिवासी समुदाय पर प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्रतिबलन का स्तर जीवन की गुणवत्ता को जीवन स्तर की अवधारणा के साथ संबंध है। प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि, जीवन की गुणवत्ता को प्रतिबलन प्रभावित करता है। प्रतिबलन के बढ़ने पर जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

सुझाव :-

- 1) प्रतिबलन का प्रभाव कम करने के लिए सकारात्मक रहने का प्रयास करना चाहिए।
- 2) किसी मुश्किल परिस्थिति को बदलना व्यक्ति के लिए संभव नहीं हो तो तनाव पर अपना नियंत्रण रखे।
- 3) सामुदायिक सह गतिविधियों में अपनी सहभागिता रखे।
- 4) तनाव से बचने के लिए अस्वास्थ्यकर आदतों से दूर रहें।

- 5) अपने लक्ष्य एवं चुनौतियां तय करना आपको कार्य करने सक्रिय रहने के लिए प्रेरित करता है जिससे तनाव कम होता है।

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1) अरूण कुमार - समाज मनोविज्ञान ।
- 2) श्रीवास्तव डॉ राम जी – आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान ।
- 3) श्रीवास्तव आलम शर्मा – आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान ।
- 4) राजेन्द्र प्रसाद सिंह जितेन्द्र कुमार उपाध्याय – विकासात्मक मनोविज्ञान ।
- 5) अरूण कुमार सिंह – उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान ।
- 6) योगेन्द्र जीत – विकासात्मक मनोविज्ञान ।
- 7) माथुर मीना – सामान्य मनोविज्ञान ।
- 8) कपिल एच – सांख्यिकी के मूल तत्व ।